بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 28 फ़रवरी 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

खैबर नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी ﷺ का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-28.02.2025

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के हवाले से खैबर के युद्ध में आप स. का नैतिक आचरण क्या था, यह वर्णन हो रहा था। युद्ध के बाद यहूदियों की ओर से नबी करीम स. की हत्या करने का प्रयास किया गया था और बकरी का विष युक्त मांस खिलाने की कोशिश की गई थी। इसका विस्तार पूर्वक वर्णन इस प्रकार है जब खैबर पर विजय हो गई और यहूदी घोर पराजय के पश्चात नबी करीम स. की दयालुता एवं सद्व्यवहार से इस तरह लाभान्वित हुए कि न केवल नबी करीम स. ने उन्हें क्षमा कर दिया बल्कि उन्हें खैबर में रहने की भी अनुमति दे दी। जब लोग संतुष्ट हो गए तो एक दिन यहूदियों के सरदार सलाम बिन मशकम की पत्नी ज़ैनब पुत्री हारसा ने आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में बकरी का मांस प्रस्तुत किया और कहा कि आप स. के लिए भेंट लाई हूँ। इस षड्यंत्र में यह अकेली महिला शामिल न थी बल्कि कुच्छ अन्य लोग भी सम्मिलित थे।

आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर वह मांस आप स. के सामने रख दिया गया और वहां हज़रत बिशर बिन ब्रा. रज़ी. भी कुच्छ अन्य सहाबियों के संग मौजूद थे। आँहज़रत स. ने उसमें से दस्ती का मांस उठाया और उसमें से थोड़ा सा टुकड़ा लिया। आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने हाथ रोक लो क्यूँकि यह दस्ती का मांस बता रहा है कि इसमें विष मिलाया गया है। हज़रत बिशर बिन ब्रा. रज़ी. ने निवेदन किया कि जब मैंने भी इसे खाया तो मुझे कुछ सन्देह हुआ था, किन्तु मैं इस कारण से कुछ नहीं बोला कि आप स. का खाना निःस्वाद हो जाएगा। परन्तु जब आप स. ने निवाला उगल दिया तो मुझे अपनेआप से बढ़कर आप

स. की चिन्ता हुई, किन्तु मुझे ख़ुशी हुई कि आप स. ने इसे निगला नहीं बल्कि उगल दिया। हज़रत बिशर रज़ी. अभी अपनी जगह से उठे भी न थे कि उनके शरीर का रंग बदलना शुरू हो गया और फिर इतना अधिक बीमार हुए कि स्वंय से करवट भी न ले सकते थे। लगभग एक वर्ष बाद आप रज़ी. का निधन हो गया। कुछ रिवायतों के अनुसार हज़रत बिशर रज़ी. अपनी जगह से उठने ही ना पाए थे कि उनकी वफ़ात हो गई। आँहज़रत स. ने उस महिला को बुलाकर पूछा कि तुझे किसने यह काम करने के लिए कहा था? उस महिला ने उत्तर दिया कि मैंने यह सोचा कि यदि आप राजा हैं तो हम आपसे मुक्त हो जाएंगे और यदि आप नबी हैं तो आपको ख़बर दे दी जाएगी। आप स. ने उस महिला को क्षमा कर दिया, जबकि एक अन्य रिवायत के अनुसार बशर बिन ब्रा रज़ी. की शहादत के बाद उस महिला की हत्या कर दी गई। सही बुख़ारी के एक कथन के अनुसार उस महिला को नहीं मारा गया था।

सही बुख़ारी में हज़रत आयशा रज़ी. से एक रिवायत मिलती है जिसके अनुसार आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु रोग से ग्रस्त होने पर फ़रमाया करते थे कि ऐ आयशा! मैं उस खाने का प्रभाव जो मैंने खैबर में खाया था सदेव अनुभव करता हूँ तथा अब भी उस विष से अपनी नाड़ियाँ कटती हुई अनुभव करता हूँ। कुच्छ टीकाकारों ने इसी कारण से आप स. के लिए कहा है कि आप स. के निधन का कारण वह विष था और इस प्रकार आप स. शहीद हुए और यह कि आप स. शहीद-ए-आज़म हैं। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इस लाग-लपेट की आवश्यकता नहीं, नबी तो वह स्तर एवं प्रतिष्ठा रखता है कि वह सिद्दीक़ (सत्यवादी) भी होता है, शहीद भी होता है। फिर यह कि यहूदियों ने उस विष से बच जाने को एक चमत्कार समझा कि आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम झूठे नबी नहीं हैं, परन्तु कुछ सरल स्वभाव के मुसलमान इस विष के प्रभाव से आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत साबित करने का प्रयास करते हैं। आँहुज़ूर स. का निधन कदाचित उस विष के कारण नहीं हुआ था अपितु केवल एक कष्ट का आभास था।

खैबर के युद्ध में हज़रत सफ़ीय्या रज़ी. की शादी का वर्णन भी मिलता है। खैबर में जब युद्ध के बंदियों को जमा किया गया तो हज़रत वहिय्या रज़ी. ने आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा से हयी बिन अख्तब की बेटी सफ़ीय्या रज़ी. को ले लिया। इस पर एक व्यक्ति आप स. के पास आया और कहा कि हयी बिन अख्तब की बेटी तो बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर की राजकुमारी है और वह आप स. के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए उचित नहीं। आप स. ने फ़रमाया कि उसे बुला लाओ, फिर आप स. ने वहिय्या रज़ी. से फ़रमाया कि इसके अतिरिक्त किसी और को ले लो। हज़रत अनस रज़ी. से रिवायत है कि आँहुज़ूर स. ने सफ़ीय्या रज़ी. को स्वतंत्र कर दिया। मुसनद अहमद बिन हम्बल की रिवायत में वर्णन है कि आप स. ने हज़रत सफ़ीय्या रज़ी को आज़ाद करते हुए फ़रमाया कि मैं तुम्हें आज़ाद करता हूँ, चाहो तो मुझसे शादी कर लो और चाहो तो अपने क़बीले की ओर वापस चली जाओ। जिसपर हज़रत सफ़ीय्या रज़ी. ने आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम से शादी करना पसंद किया।

खैबर के समस्त कार्यों से निबटने के बाद आप स. वहां से रवाना हुए और छः मील की दूरी के बाद आप स. ने विश्राम करना चाहा ताकि हज़रत सफ़ीय्या से शादी को पूर्ण रूप दिया जा सके किन्तु हज़रत सफ़ीय्या रज़ी. की इच्छानुसार आप स. ने यात्रा जारी रखी और लगभग बारह मील की दूरी पर जाकर पड़ाव किया और वहां हज़रत सफ़ीय्या रज़ी. से शादी हुई। हज़रत सफ़ीय्या बयान करती हैं कि आँहुज़ूर स. खैबर के अत्यन्त निकट ठहरना चाहते थे और मुझे ख़तरा था कि मेरी क़ौम कहीं आप स. को कष्ट में न डाले, इस लिए मैंने वहां रुकने के बजाए थोड़ी दूरी के बाद रुकने की प्रार्थना की। आप स. के सुन्दर आचरण का ही प्रभाव था कि हज़रत सफ़ीय्या रज़ी. को दुनिया जहान में आप स. से अधिक प्रिय अन्य कोई नहीं था।

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ी. के आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम के तम्बू के बाहर पहरा देने और हज़रत अबू अय्यूब रज़ी. के इस निर्दोष प्रेम पर आप स. का उन्हें दुआ देने का वर्णन भी मिलता है। अगले दिन आप स. के वलीमे की अत्यन्त सादा एवं श्रेष्ठ व्यवस्था हुई। तीन दिन तक ठहरने के बाद यहाँ से रवाना हुए। हज़रत सफ़ीय्या रज़ी. की आज़ादी उनके मेहर का बदला बन गई। यहाँ हज़रत सफ़ीय्या के एक सपने का भी वर्णन मिलता है, फ़रमाती हैं कि आप स. के आगमन से कुछ दिन पूर्व मैंने सपने में देखा था कि यसरब की ओर से चाँद आया है और मेरी झोली में गिर गया है। हज़रत सफ़ीय्या ने पचास हिजरी में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ी में दफ़नाया गया।

हज़रत सफ़ीय्या रज़ी. की शादी पर पश्चमी विद्वान् भद्दे रूप में टिप्पणियाँ करते हैं कि जब आप स. ने हज़रत सफ़ीय्या रज़ी. के सौन्द्रीय की चर्चा सुनी तो हज़रत वहिय्या रज़ी. से उन्हें वापस मांग लिया और स्वंय उनसे शादी कर ली इत्यादि। इस हवाले से हुज़ूरे अनवर ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. का एक कथन भी पेश फ़रमाया कि अरब देश में यह प्रथा थी कि विजय से प्राप्त देश के सरदार की बेटी अथवा पत्नी से देश में अमन व शान्ति बनाए रखने और उस देश के लोगों से लगाओ पैदा करने के लिए शादियाँ किया करते थे जिससे देश की जनता एवं राजा के कुटुंब वाले संतुष्ट हो जाया करते थे।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- आप स. ने शादी के निश्चय जब भी किए तो मूल कारण ये नहीं थे जो बयान किये जाते हैं, मूल कारण तो अल्लाह का आदेश होता होगा। आप स. की तो एक एक हरकत एवं विश्राम, इलाही इच्छा के बिना नहीं हुआ करती थी, जैसा के स्वंय अल्लाह तआला फ़रमाता है कि कह दे कि मेरी आराधना तथा मेरे बलिदान तथा मेरा जीवन एवं मृत्यु अल्लाह ही के लिए है जो समस्त ब्रहमांड का पालनहार है। जो सारे काम ही उसके लिए करते हों और जिनका पल पल मार्ग दर्शन अर्श का ख़ुदा करता हो, वे भला इतना बड़ा निश्चय अपने आप कैसे कर सकते हैं। तो ये सारी शादियाँ निःसन्देह अल्लाह की इच्छानुसार आप स. ने की थीं। हां, इनके परिणाम अत्यन्त महत्त्व पूर्ण प्रभाव अपने भीतर रखते थे। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक किताब 'आईना कमालाते इसलाम' में बयान फ़रमाते हैं कि आँहज़रत स. के बारे में निःसन्देह सहाबा किराम रज़ी. का यह विश्वास था कि आंजनाब स. का कोई कथन एवं

कर्म अल्लाह की वह्यी से ख़ाली नहीं ..... आप स. ने फ़रमाया कि उस ज़ात की मुझको क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि जो भी क्रिया मेरे द्वारा होती है, चाहे वह कर्म हो कि कथन, वह सब ख़ुदा तआला की ओर से है। यदि यह कहा जाए कि हदीस की किताबों में कुछ बातों के विषय में आँहज़रत स. की इज्तिहादी (विवेचना) ग़लती का भी वर्णन है, यदि समस्त कथन एवं कर्म आँहज़रत स. के वह्यी द्वारा ही थे तो फिर वह ग़लती क्यूं हुई, यद्यपि आँहज़रत स. उसपर क़ायम नहीं रखे गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इसका जवाब यह है- हम इस इज्तिहादी ग़लती को भी वह्यी से अलग नहीं समझते क्यूँकि वह कोई छोटी मोटी बात न थी ..... कभी कभी ख़ुदा तआला कुछ विशेष कारण से नबियों की बुद्धि एवं समझदारी को अपने क़ब्ज़े में ले लेता है तब कोई कथन एवं कर्म भूल चूक अथवा ग़लती के रूप में इन नबियों के द्वारा क्रियान्वत हो जाता है तथा वह दिव्य योजना जिसका निश्चय किया गया है प्रकट हो जाती है, तब फिर वह्यी का सागर तीव्रता से चलने लगता है और ग़लती को बीच में से उठा दिया जाता है, मानो उसका कोई वजूद ही नहीं था ..... अतएव जिस अवस्था में हमारे सय्यद-ओ-मौला मुहम्मद मुस्तुफ़ा स. के लगभग दस लाख कथनों एवं कर्मों में पूर्ण रूप से ख़ुदा का ही जलवा नज़र आता है तथा हर बात में और समस्त कर्मों में, विश्राम में, कथनों में, क्रियाओं में, रूहुल क़ुदुस के चमकते हुए प्रकाश नज़र आते हैं, तो फिर यदि एक आध बात में मानवीय गंध भी आए तो इससे क्या हानि, बल्कि अनिवार्य था कि मनुष्य होने के प्रमाण के लिए कभी कभी ऐसा भी हो जाता, ताकि लोग शिर्क की बला में लिप्त न हो जाएँ।

अतः किसी हदीस अथवा इतिहास एवं सीरत की किताब में आँहज़रत स. के जीवन परिचय एवं जीवन चरित्र के सम्बन्ध में कोई भी कथन बयान हो तो उपरोक्त क़ुरआनी आयत के प्रकाश में और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के लेखों के प्रकाश में इन चीज़ों को देखना चाहिए और परखना चाहिए, न कि आरोप लगा दिया जाए और हर एक पश्चिमी विद्वान् की बात मान ली जाए और समझा जाए कि हम निरुत्तर हो गए हैं। यह है आँहज़रत स. की प्रतिष्ठा एवं सम्मान को क़ायम रखने का वास्तविक काम, न कि केवल नारे लगा देना। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि दो दिन बाद रमज़ान भी शुरू हो रहा है, ख़ुदा तआला हर एक को रमज़ान से भरपूर लाभ पाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, इसके लिए दुआ भी करें और कोशिश भी करें।

ख़ुत्बे के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम चौधरी मुहम्मद अनवर रियाज़ साहब इब्ने मुकर्रम चौधरी मुहम्मद इसलाम साहब का सदवर्णन फ़रमाया और जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131